National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 356-357
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ आयुष दीक्षित
सहायक प्राध्यापक,
साहित्य विभाग, केन्द्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, श्रीं राजीव गान्धी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक

Correspondence:
डॉ आयुष दीक्षित
सहायक प्राध्यापक,
साहित्य विभाग, केन्द्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, श्रीं राजीव गान्धी परिसर, शृङ्गेरी, कर्नाटक

शृङ्गारप्रकाश के आलोक में वृत्तियाँ

डॉ आयुष दीक्षित

शोधसार – प्रस्तुत शोधपत्र में महाराजा भोजराज विरचित विशाल काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'शृङ्गारप्रकाश' (साहित्यप्रकाश) के आलोक में नाट्य एवं काव्य के महत्वपूर्ण तत्त्व 'वृत्तियों' का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। वृत्ति का सामान्य अर्थ पात्रों के कायिक, वाचिक और मानसिक व्यवहार से है। आचार्य भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में चार वृत्तियों (भारती, सात्त्वती, कैशिकी और आरभटी) का प्रतिपादन किया है, किन्तु भोजराज ने शृङ्गारप्रकाश के 12वें अध्याय में एक पांचवीं वृत्ति 'विमिश्रा' (सर्वसाधारणी) की अभिनव परिकल्पना की है, जहाँ सभी वृत्तियों का सम्मिश्रण होता है। इस शोधपत्र में भरतमुनि और भोजराज के वृत्ति-लक्षणों का तुलनात्मक विवेचन करते हुए यह दर्शाया गया है कि भोजराज ने परम्परा का अनुगमन करते हुए भी सूक्ष्म मौलिक परिवर्तन किए हैं; जैसे भारती वृत्ति के सन्दर्भ में भरत के 'पुरुषप्रयोज्या' के स्थान पर भोजराज का 'नृवरप्रयोज्या' विशेषण अधिक व्यावहारिक और सटीक है। निष्कर्षतः, वृत्तियों के स्वरूप निर्धारण में शृङ्गारप्रकाश का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

कूटशब्द – शृङ्गारप्रकाश, भोजराज, नाट्यवृत्ति, भारती वृत्ति, कैशिकी, सात्त्वती, आरभटी, विमिश्रा वृत्ति, नाट्यशास्त्र, भरतमुनि।

भोजराज का शृङ्गारप्रकाश संस्कृतवाङ्मय की एक अमूल्य निधि है, इतना विशाल काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ कोई और नहीं है। इस ग्रन्थ का अन्य नाम साहित्यप्रकाश भी है जो स्वयं भोज ने माना है। साहित्य पर इस ग्रन्थ में आद्योपान्त विवेचन हुआ है। भामह राजशेखर कुन्तक आदि की परम्परा में साहित्य पर सर्वाधिक विचार इसी ग्रन्थ में देखा जा सकता है। कुल 36 अध्यायों में वर्णित इस ग्रन्थ का नाम शृङ्गारप्रकाश है पर वर्तमान में यह अधिक प्रकाश में नहीं है, सम्भवतः 1962 में व्ही राघवन द्वारा इस ग्रन्थ पर एक आङ्ग्लभाषात्मक महत्वपूर्णशोधकार्य किया गया था, जो अत्यधिक प्रसिद्ध हुआ, अपने इस कार्य के लिये उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। उस शोधप्रबन्ध के एक भाग का हिन्दी अनुवाद प्रभुदयाल अग्निहोत्री द्वारा किया गया जो मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा प्रकाशित है। पण्डित रेवाप्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पूर्ण शृङ्गारप्रकाश का परिशोधित सम्पादन किया गया जो इस कड़ी में सर्वाधिक सुलभ है। इस ग्रन्थ में काव्यशास्त्रीय समस्त तत्त्वों का साङ्गोपाङ्ग विवेचन किया गया है, इन्हीं में एक महत्वपूर्ण तत्त्व है वृत्तियाँ।

'वृत्ति' शब्द 'वृतु वर्तने' धातु में संज्ञार्थक 'क्तिन' प्रत्यय होकर बना है। अतः उसका सामान्य अर्थ है व्यवहार करना, वर्तमान होना इत्यादि। काव्यशास्त्र में अनेक रूपों में यह शब्द प्रयुक्त है जैसे सूत्र की संक्षिप्त व्याख्या के लिए, अभिधा आदि शब्द व्यापार के लिए, अन्तःकरण के परिणाम के लिए । नाट्यशास्त्र और काव्यशास्त्र दोनों के समन्वय के अवसर पर आनन्दवर्धन ने कहा की भरतोक्त कैशिकी आदि वृत्तियाँ तो कार्यवृत्तियाँ है और उपनागरिका आदि वृत्तियाँ शब्द वृत्तियाँ हैं।

नाट्यप्रयोग में वृत्तियां अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। नाट्यवेद से उत्पन्न, वागङ्गादि अभिनयात्मिका और काव्यक्रिया की हेतु हैं, व्यावहारिक रूप से नायक, नायिका, प्रतिनायक एवं अन्य पात्रों का कायिक, वाचिक और मानसिक व्यापार (चेष्टा) ही 'वृत्ति' है। भोजराज के अनुसार चित्त के विकास, विक्षेप, संकोच तथा विस्तार की दशा में पात्रों के जो व्यवहार, व्यापार या वर्तन हुआ करते हैं, उन्हीं का एक सामान्य नाम है वृत्ति।

भोजराज ने श्रृङ्गारप्रकाश में कहा भी है- **मुखादिसन्धिषु च व्याप्रियमाणानां नायिकानायकोपनायकादीनां मनोवाक्कायकर्म-निबन्धनाः पञ्च वृत्तयो भवन्ति, भारती आरभटी कैशिकी सात्त्वती विमिश्रा चेति।**

वृत्तियाँ अभिनय करने के तरीके से सम्बद्ध हैं। कहीं गीत, नृत्य तथा श्रृंगार चेष्टाओं का आधिक्य होता है, कहीं युद्ध-मारकाट, लड़ाई- झगड़े और इन्द्रजाल आदि का बाहुल्य होता है, कहीं केवल संवाद का ही प्राधान्य होता है।

भरत के अनुसार वृत्तियां चार प्रकार की हैं- भारती, सात्वती, कैशिकी और आरभटी। ये चारों वृत्तियाँ प्रधान रूप से तो एक दूसरे से भिन्न हैं किन्तु एक दूसरे से संवलित भी रहती ही हैं। नाट्य-दर्पणकार ने कहा है कि चार वृत्तियाँ किसी एक वृत्ति के प्रधान के कारण ही होती हैं, नहीं तो अनेक व्यापारों से मिलती हुआ वृत्ति एक ही है, क्योंकि नाट्य या प्रबंधादि में कोई भी वृत्ति दूसरी वृत्तियों के योग के बिना निष्पत्र हो ही नहीं सकती।

भारती वृत्ति-

भोजराज के मत में -

या वाक्प्रधाना नृवरप्रयोज्या स्त्रीवर्जिता संस्कृतवाक्ययुक्ता।
स्वानमधेयैर्भरतप्रयोज्या सा भारती नाम भवेत्तु वृत्तिः॥

श्रृ.प्र. 12/32

भरत के मत में-

या वाक्प्रधाना पुरुषप्रयोज्या स्त्रीवर्जिता संस्कृतपाठ्ययुक्ता।
स्वनामधेयैर्भरतैः प्रयुक्ता सा भारती नाम भवेत् तु वृत्तिः॥

20/26ना.शा.

सात्त्वती वृत्ति-

भरत के मत में

या सात्त्वतेनेह गुणेन युक्ता न्यायेन वृत्तेन समन्विता च।
हर्षोत्कटा संहृतशोकभावा सा सात्त्वती नाम भवेत् तु वृत्तिः॥

ना.शा 20/41

भोज के मत में

या सात्त्वतेनेह गुणेन युक्ता त्यागेन वृत्तेन समन्विता च।
हर्षोत्कटा संहृत शोकभावा सा सात्त्वती नाम भवेत्तु वृत्तिः॥

शृ.प्र. 12-35

आरभटी वृत्ति-

भरत के मत में **-**

प्रस्तावपातप्लुतलङ्घितानि च्छेद्यानि मायाकृतमिन्द्रजालम्।
चित्राणि युद्धानि च यत्र नित्यं तां तादृशीमारभटीं वदन्ति॥

ना.शा 22/64

भोज के मत में आरभटी-

प्रस्तावपातप्लुतलङ्घनानि छेद्यानि मायाकृतमिन्द्रजालम्।
चित्राणि युद्धानि च यत्र वृत्तिं ता तादृशीमारभटीं वदन्ती॥

शृ.प्र. 12-37

कैशिकी वृत्ति

भरत के मत में कैशिकी

या श्लक्ष्णनैपथ्यविशेषचित्रा स्त्रीसंयुता या बहुनृत्यगीता।
कामोपभोगप्रभवोपचारा तां कैशिकीं वृत्तिमुदाहरन्ति।।

ना.शा 20/53

भोज के मत में कैशिकी

या श्लक्ष्णनेपथ्यविशेषयुक्ता स्त्रीसंयुता या बहुगीतनृत्ता।
कामोपभोगप्रभवोपचारा तां कैशिकीं वृत्तिमुदाहरन्ति॥

शृ.प्र. 12-38

भोज के मत में विमिश्रा

यत्रारभट्यादिगुणास्समस्ताः मिश्रत्वमाश्रित्य मिथः प्रथन्ते
मिश्रेति तां वृत्तिमुशन्ति धीराः साधारणीमर्थचतुष्टयस्य॥

शृ.प्र. 12-40

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि भरत के मत चार वृत्तियाँ हैं, लेकिन भोजराज ने पाँचवी वृत्ति की भी प्रकल्पना की है जिसका नाम है विमिश्रा, जिसे सर्वसाधारणी वृत्ति भी कहा जाता है, यहाँ पर सभी वृत्तियों का मिश्रण होता है। इसके अतिरिक्त अन्य चारों वृत्तियों में प्रायः भरत और भोज के मत में समानता ही है किन्तु कुछ गहराई से देखने पर परिवर्तन भी मालूम पड़ता है, जैसे भारती वृत्ति के सन्दर्भ में भरत ने पुरुषप्रयोज्या कहा है, लेकिन संस्कृतरूपकों में प्रायः देखा जाता है कि बहुत से पुरुष पात्र ऐसे भी होते हैं जो संस्कृत नहीं वरन् प्राकृत में सम्भाषण करते हैं, अतः भोजराज के मत में भारती का विशेषण नृवरप्रयोज्या उपयुक्त ही मालूम पड़ता है। अन्य वृत्तियों के लक्षणों के सन्दर्भ में भोजराज पर भरत की छाप स्पष्ट रूप से दिखलाई देती है। मानों शब्द ज्यों के त्यों रख दिये गये हों।